International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 10 Issue 2, July-December, 2023, Impact Factor: 7.786

संत हरिदास - वाणी में मिथक

प्रो० संजीव कुमार

चेयर प्रोफ़ेसर, सन्त साहित्य शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरि०)

शोध–पत्र–सार

सन्त शिरोमणि हरिदास का रामायण, महाभारत, उपनिषदों, पुराणों आदि से सम्बन्धित ज्ञान अथाह और गम्भीर है जिसका वर्तमान स्थितियों में उन्होंने सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली प्रयोग किया है। अजामिल, हनुमान, शुकदेव, अम्बरीष, कार्तिकेय, लक्ष्मण, शुक्राचार्य, राजा हरिश्चन्द्र, राजा बलि, भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु, नृसिंह अवतार आदि सैकड़ों पात्रों और उनसे जुड़े प्रसंगों के माध्यम से संत हरिदास ने भक्ति की शक्ति की अपराजेय महत्ता को जन–जन के मन में प्रतिष्ठित किया है। सभी प्राचीन कथाओं एवं पात्रों को सोद्देश्य नवीनता प्रदान करने में सन्तप्रवर की प्रतिभा चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी है। इन पुराकथाओं के गूढ़ तत्त्वों की मूल संवेदना और प्रभाववत्ता को जन सामान्य तक पहुँचाने के साथ–साथ संत हरिदास ने अपने पूर्ववर्ती अन्य संतों दादू, नानक, रैदास, पीपा, वनवारीदास, नारायण दास, नामदेव आदि के उदात्त, अनुकरणीय और वन्दनीय चरित पर प्रकाश डालकर सभी लोगों को उनके बताये मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया है। संतप्रवर हरिदास का स्पष्ट मत है कि जो भी भक्त, साधक, तपस्वी, योगी सात्त्विक आचार–विचार के साथ प्रभु भक्ति में लीन हो जाता है, प्रभु उसके सभी कष्टों का हरण करके उसे अपनी दिव्यता के आलोक से उद्भासित, प्रकाशित और आलोकित करके मुक्ति प्रदान करते हैं क्योंकि श्रीहरि का तो एकमात्र उद्देश्य दुष्टों का संहार करके सज्जनों का परित्राण करना है, तभी तो अधर्म का विनाश होगा और धर्म की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा।

मुख्य शब्द : मिथक, पुराकथा, वाङ्मय, प्रासंगिक, संत शिरोमणि, रामायण, महाभारत, उपनिषद्, पुराण, द्रौपदी, अनुकम्पा, हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद, निर्लज्ज, रामसेतु, सेतुबंध, सुनीति, सुरुचि, तदनंतर, यंत्रणा, संत्रस्त, प्रलोभन, पार्वती, कार्तिकेय, मातृत्व, परित्राण, गौतमी गंगा, अजामिल, हनुमान, राजा हरिश्चन्द्र, अपराजेय, दादू, नानक, पीपा, रैदास।

'मिथक' शब्द का शाब्दिक अर्थ है, ''प्राचीन पुराकथाओं का तत्त्व जो नवीन स्थितियों में नये अर्थ का वहन करे।''[प] 'पुराकथा' शब्द का अर्थ है, ''प्राचीन कथा''।[पप]

हिन्दी रत्न कोश' के अनुसार भी पुरा शब्द का अर्थ है – 'प्राचीन'।[पपप] 'संस्कृत शब्दार्थ–कौस्तुभ' के अनुसार 'पुराकथा' का अर्थ है, ''पुरानी कहावत या कहानी।''[पअ] स्पष्ट है कि साहित्यकार प्राचीन वाङ्मय में से पुरानी कथाओं का चयन करके उनकी नवीन स्थितियों के अनुसार नवीन व्याख्या करता है जो युगानुरूप और उद्देश्यपूर्ण होती हैं। प्राचीन कथाओं की नयी परिस्थितियों, प्रसंगों, पात्रों के अनुसार की गयी सोद्देश्य, प्रासंगिक, प्रभावशाली उद्भावना ही मिथक है। ''साहित्य सृजन के क्षेत्र में मिथक अब एक ऐसा तत्त्व है जो भाषा को व्यापक आयाम देकर रहस्यात्मकता, लाक्षणिकता और विलक्षणता प्रदान करने में समर्थ है।''[अ] मिथक की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति लिखतीं हैं, ''मिथक इसीलिए मिथ्या कल्पना या यूटोपिया न होकर, सत्य के मूल तक पहुँचने का एक नैतिक उपक्रम है।''[अप]

सन्तप्रवर हरिदास के जन्म–मरण के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। 'हरिदास जी की वाणी' के अनुसार, ''आपका आविर्भाव 1750–1775 के बीच माना जाता है तो ब्रह्मलीन का समय 1840–50 के बीच अनुमानतः

हो सकता है।[अपप] हरियाणा के हाँसी, बेरी, माजरा, सामण, कलानौर, नरेना, राणीला, मोखरा आदि क्षेत्रों पर इनका व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इनकी शिष्य परम्परा में 22 प्रमुख शिष्य थे, इसीलिये इनके सम्प्रदाय को ''बाई सी''[अपपप] के नाम से जाना जाता है। इनकी वाणी को व्यवस्थित रूप में सम्पादित करने और उनकी व्याख्या करने का श्रेय श्री भजनदास स्वामी को है। संत शिरोमणि दादू की शिष्य–परम्परा में महत्त्वपूर्ण संत हरिदास की वाणी के संकलन का नाम है 'हरिदास जी की वाणी'।

सन्त शिरोमणि हरिदास का रामायण, महाभारत, उपनिषदों एवं पुराणों से सम्बन्धित अध्ययन एवं ज्ञान विरल और व्यापक है। शिवपुराण में कथा वर्णित है कि एक बार द्रौपदी नदी में स्नान कर रही थी। कुछ दूर पर दुर्वासा भी स्नान कर रहे थे। दुर्वासा का अधोवस्त्र जल में बह गया। वे बाहर नहीं निकल पा रहे थे। द्रौपदी ने अपनी साड़ी में से थोड़ा–सा कपड़ा फाड़कर उनको दिया। फलस्वरूप उन्होंने द्रौपदी को वर दिया कि उनकी लज्जा पर कभी आँच नहीं आयेगी।[पग] इसी पूरे प्रसंग को सन्त हरिदास ने महाभारत में दुःशासन द्वारा किये जा रहे द्रौपदी के चीर–हरण से जोड़ा है। श्रीकृष्ण की अनुकम्पा से द्रौपदी का चीर बढ़ता ही गया और दुष्ट दुःशासन एवं अन्य कौरवों का निर्लज्ज मनोरथ पूर्ण नहीं हो पाया। संत हरिदास के कहने का भाव यह है कि निःस्वार्थ भाव से किये गये मंगल कार्य कभी भी निरर्थक सिद्ध नहीं होते और शुभकर्मियों पर प्रभु की कृपा सदैव बनी रहती है –

''दुर्वासा ने द्रोपदी दई लंगोटी चीर।
हरि सुमरण से हरिदास, बढ्यो अपर बलचीर।।''[ग]

कठोपनिषद् में ऋषि वाजश्रवा और उनके पुत्र नचिकेता की कथा वर्णित है।[गप] 'वाजश्रवा ने एक बार अपना सर्वस्व दक्षिणा में दे डाला था जिसपर इसने (नचिकेता) पिता से पूछा था कि मुझे किसको प्रदान करते हैं। वाजश्रवा ने क्रुद्ध होकर कह दिया – 'मृत्यु को'। इस पर यह मृत्यु के पास चला गया और वहाँ तीन दिनों तक निराहार रहकर उससे ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।[गपप] संत हरिदास ने इस प्रसंग के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि प्रभु भक्त तो मृत्यु के मुख में जाकर भी सकुशल लौट आते हैं और उनके नाम के नगाड़े बजते हैं तथा युगों–युगों तक उनकी कीर्ति–ध्वजा गगन में फहराती रहती है तथा लोग उनके कृत्यों का सदैव बखान करते रहते हैं –

''नाव नगारे हरीदास, बाजे जस निसाण ।
नरक निवारे नासकेत, प्रजा करे बखान।।''[गपपप]

संतप्रवर हरिदास ने रामायण में वर्णित समुद्र पर बनाये गये पुल के प्रसंग को अत्यधिक सार्थक स्वरूप प्रदान किया है। श्रीराम ने लंका पर आक्रमण करने के समय पुल बँधवाया था जिसको ''रामसेतु''[गपअ] या ''सेतुबंध''[गअ] कहते हैं। नल और नील ने अन्य बन्दरों की सहायता से श्रीराम की सेना को पार ले जाने के लिए यह पुल बँधवाया था। श्रीराम के प्रभुत्व से सभी पत्थर समुद्र में तैरने लगे। इस प्रसंग के माध्यम से संत हरिदास यह सिद्ध और स्पष्ट करना चाहते हैं कि जिस प्रकार श्रीराम के प्रभुत्व से पत्थर समुद्र में डूबने की अपेक्षा तैर जाते हैं उसी प्रकार श्रीराम का सुमिरन करने से मनुष्य भी डूबता नहीं है, अपितु वह भवसागर से पार उतर जाता है –

''सिला समद माथे धरी हरीदास कहे भाइ।
नाव नीर बोया नहीं, मस्तक लिया चढाई।।''[गअप]

भक्त ध्रुव की कथा के माध्यम से संत हरिदास ने भक्ति की शक्ति के वर्चस्व को प्रतिपादित किया है। 'ब्रह्मा के पुत्र स्वायंभुव मनु हुए। उनकी पत्नी शतरूपा थी। उनके पुत्र का नाम उत्तानपाद था, जिन्होंने सुनीति और सुरुचि से विवाह किये। सुनीति के पुत्र का नाम ध्रुव रखा गया। ध्रुव पिता की गोद में बैठना चाहते थे पर सुरुचि के संकोच से उत्तानपाद ने उन्हें गोद में नहीं बैठाया। सुरुचि ने अपशब्दों का प्रयोग भी किया। इन सबसे तिक्त हो ध्रुव ने कठोर तपस्या करने की ठानी। तपस्या के बल से उन्होंने वह पद प्राप्त किया जो कि मनुष्य को प्राप्त नहीं होता। तदनंतर उन्हें ध्रुवलोक की प्राप्ति हुई।[गअपप] प्रस्तुत कथा के माध्यम से संत हरिदास ने मनुष्य को यह समझाने

का प्रयास किया है कि तृष्णाओं को त्यागकर सच्चे मन से श्रीहरि का ध्यान किया जाये तो भक्त भी परम पद पर सुशोभित हो जाता है –

''कीया राज राजनसिर राजा, अज हूँ अटल धू शिखिर विराजे।
तुम बिन हरिदास के स्वामी, ऐसा विरद कौण कूं छाजे।।''[गअपपप]

भक्त प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु की कथा के माध्यम से भी संतप्रवर हरिदास ने स्पष्ट किया है कि सच्चे भक्तों की भक्ति अडिग होती है और वे कठोर यंत्रणाओं से संत्रस्त होकर भी भक्ति का मार्ग नहीं त्यागते। श्रीहरि भी अपने भक्तों की पीड़ा हरने के लिए विविध–विविध रूपों में अवतार लेते हैं और दुष्टों, असुरों, दानवों का संहार करके सज्जनों का परित्राण करते हैं तथा अधर्म का विनाश करके धर्म की रक्षा करते हैं। जब भक्त प्रह्लाद विषम यंत्रणाओं को सहता हुआ भी प्रभु के नाम का जाप नहीं छोड़ता तक क्रोधित हिरण्यकशिपु उसको खम्बे से बाँधकर मार देने के लिए आतुर हो जाता है। तभी वहाँ पर खम्बे को फाड़कर श्रीहरि नृसिंह अवतार के रूप में प्रकट होकर उस क्रूर, बर्बर, हिंस्र हिरण्यकशिपु के शरीर को नाखूनों से विदीर्ण कर देते हैं। कहने का आशय है कि सच्चे साधक न तो यंत्रणाओं से घबराते हैं और न विकृतियों के प्रलोभन में पड़कर सन्मार्ग का त्याग करते हैं। ऐसे साधकों पर प्रभु अनुकम्पा सदैव बनी रहती है –

''बांधि खंभ सौं मारण लागा, जनके काजि सिंह ह्वे गाजै।
तुम बिन हरिदास के स्वामी ऐसा विड़द कवण को छाजै।।''[गपग]

संत हरिदास ने शिव–पुत्र कार्तिकेय के यति बनने की कथा का अपनी वाणी में सार्थक प्रयोग किया है। 'तारक–वध से प्रसन्न होकर पार्वती ने कार्तिकेय को आमोद–प्रमोद की आज्ञा दी। उसने देव–पत्नियों के साथ रमण प्रारम्भ किया। पार्वती को ज्ञात हुआ तो उन्होंने वैसा ही रूप धारण करके रहना आरम्भ कर दिया, फलतः कार्तिकेय जब भी किसी देव–पत्नी के सम्पर्क में आता, उसे मातृत्व का आभास होता। अंत में नारी से मात्र मातृत्व का सम्बन्ध रखने का प्रण कर उसने 'गौतमी गंगा' में स्नान कर पाप मोचन किया। तब से वह स्थान 'कार्तिकेय–तीर्थ' नाम से विख्यात हो गया।[गग] संत हरिदास के कहने का आशय है कि जब–जब भक्त सन्मार्ग से विचलित होकर कर्त्तव्य मार्ग का त्याग करते हैं तब–तब प्रभु उनको सन्मार्ग पर लाकर उसकी ख्याति की रक्षा करते हैं और महान् कर्मों की ओर उनको प्रवृत्त करके उनके गौरव को युगों–युगों तक अक्षुण्ण कर देते हैं। अन्य सन्देश यह है कि परस्त्रीगमन का मार्ग महान् व्यक्तियों की श्रेष्ठता को आघात पहुँचाता है, इसीलिए पर नारी के प्रति मातृत्व का भाव रखना चाहिये।

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में हम निर्भ्रान्त रूप में कह सकते हैं कि सन्त शिरोमणि हरिदास का रामायण, महाभारत, उपनिषदों, पुराणों आदि से सम्बन्धित ज्ञान अथाह और गम्भीर है जिसका वर्तमान स्थितियों में उन्होंने सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली प्रयोग किया है। अजामिल, हनुमान, शुकदेव, अम्बरीष, कार्तिकेय, लक्ष्मण, शुक्राचार्य, राजा हरिश्चन्द्र, राजा बलि, भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु, नृसिंह अवतार आदि सैकड़ों पात्रों और उनसे जुड़े प्रसंगों के माध्यम से संत हरिदास ने भक्ति की शक्ति की अपराजेय महत्ता को जन–जन के मन में प्रतिष्ठित किया है। सभी प्राचीन कथाओं एवं पात्रों को सोद्देश्य नवीनता प्रदान करने में सन्तप्रवर की प्रतिभा चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी है। इन पुराकथाओं के गूढ़ तत्त्वों की मूल संवेदना और प्रभाववत्ता को जन सामान्य तक पहुँचाने के साथ–साथ संत हरिदास ने अपने पूर्ववर्ती अन्य संतों दादू, नानक, रैदास, पीपा, वनवारीदास, नारायण दास, नामदेव आदि के उदात्त, अनुकरणीय और वन्दनीय चरित पर प्रकाश डालकर सभी लोगों को उनके बताये मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया है। संतप्रवर हरिदास का स्पष्ट मत है कि जो भी भक्त, साधक, तपस्वी, योगी सात्त्विक आचार–विचार के साथ प्रभु भक्ति में लीन हो जाता है, प्रभु उसके सभी कष्टों का हरण करके उसे अपनी दिव्यता के आलोक से उद्भासित, प्रकाशित और आलोकित करके मुक्ति प्रदान करते हैं क्योंकि श्रीहरि का तो एकमात्र उद्देश्य दुष्टों का

संहार करके सज्जनों का परित्राण करना है, तभी तो अधर्म का विनाश होगा और धर्म की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा।

सन्दर्भ सूची

1 सम्पा० कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दलाल श्रीवास्तव; बृहत हिन्दी कोश, पृ० 894
2 वही, पृ० 699
3 सम्पा० दामोदरदास गुप्त, हिन्दी रत्न कोश, पृ० 365
4 सम्पा० चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा तथा पण्डित तारिणीश झा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ० 702
5 डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथक कोश, पृ० 7
6 वही, पृ० 8
7 भजनदास स्वामी, हरिदास जी की वाणी, पृ० 28
8 वही, पृ० 27
9 डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथक कोश, पृ० 139
10 भजनदास स्वामी, हरिदास जी की वाणी, पृ० 464
11 डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथक कोश, पृ० 156
12 राणाप्रसाद शर्मा, पौराणिक कोश, पृ० 260
13 भजनदास स्वामी, हरिदास जी की वाणी, पृ० 463
14 राणाप्रसाद शर्मा, पौराणिक कोश, पृ० 445
15 वही, पृ० 537
16 भजनदास स्वामी, हरिदास जी की वाणी, पृ० 461
17 डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथक कोश, पृ० 154
18 भजनदास स्वामी, हरिदास जी की वाणी, पृ० 394
19 वही, पृ० 395
20 डॉ० उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथक कोश, पृ० 60